P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-10* January- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

वक्रोक्ति के संदर्भ में 'स्याम सनेही' और 'वेलि क्रिसन रूकमणीरी' का तुलनात्मक अध्ययन

सजिता नायर
विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
स्टेनी मेमोरियल पी.जी. कॉलेज, मानसरोवर,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

अनुभूति को संप्रेषणीय बनाने के लिए कवि जिस अभिव्यक्ति कौशल अथवा चमत्कृति का आश्रय लेता है, भारतीय काव्यशास्त्र में उसे 'काव्य–कला' का नाम दिया जाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि असाधारण तीव्र आनुभूतिक उत्कर्ष के लिए आवश्यक अभिव्यंजनात्मक विशिष्ट लावण्य, विच्छिति अथवा वक्रता ही काव्य का कलापक्ष है। एतदर्थ जब हम आलमकृत 'स्याम सनेही' तथा पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि' के काव्य सौंदर्य का विवेचन करते हैं तो हम पाते हैं कि रीतिकालीन स्वच्छन्द काव्यधारा के कवि आलम और डिंगल भाषा के कवि शिरोमणि पृथ्वीराज राठौड़ दोनों ही वक्रोक्ति कौशल से सम्पन्न कवि हैं। आलम की तुलना में वेलिकार ने प्रायः प्रत्येक छंद में वक्रोक्ति की सृष्टि की है। वर्ण वक्रोक्ति, पद पूर्वार्द्ध वक्रता, पद परार्ध वक्रता, पर्याय वक्रता, वाक्य वक्रता और प्रकरण वक्रता के सूत्र दोनों कृतियों में पर्याप्त रूप में उपलब्ध होते हैं। प्रबन्ध वक्रता के आलोक में जब हम आलमकृत 'स्याम सनेही' तथा पृथ्वीराज कृत 'वेलि' का मूल्यांकन करते हैं तो स्पष्ट होता है कि उक्त कवियों ने अपनी कवित्व शक्ति तथा रचना कौशल का पूरा परिचय दिया है। यह अवश्य है कि स्वच्छंद काव्य धारा के कवि के रूप में आलम ने काव्य के बाह्य उपादानों जैसे अलंकार, रीति, वक्रोक्ति आदि के सम्बन्ध में विशेष ध्यान केन्द्रित नहीं किया है। पृथ्वीराज राठौड़ ने 'वेलि' में आलम की तुलना में अधिक प्रशंसनीय एवं प्रभावी रूप में वक्रोक्ति विशेषतः प्रबन्ध वक्रोक्ति का प्रयोग किया है।

मुख्य शब्द : वक्रोक्ति, विच्छिति, शिरोमणि, अनुशीलन, भागवत्, सगुम्फन, अभिव्यंजना, लोकोत्तर, वैचित्र्य, वर्ण विन्यास, पद पूर्वार्द्ध, पद परार्ध, अर्थालकार आदि।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य जगत में रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्य धारा के कवि आलम कृत 'स्याम सनेही' और डिंगल भाषा के कवि शिरोमणि पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि क्रिसन रूकमणीरी' उत्कृष्ट काव्य कला का उदाहरण है। आलोच्य कृतियों में कृष्ण–रूक्मिणी परिणय जैसे विशिष्ट विषय का प्रणयन किया गया है। दोनों ही कृतियों में संवेदनात्मक भाव सम्पन्नता के साथ शिल्पकला का परिपाक दर्शनीय है। विवेच्य कृतियों में कथानक की साम्यता के बावजूद दोनों कवियों ने अपनी–अपनी अनुभूति को इस ढ़ंग से प्रस्तुत किया है कि उनकी अभिव्यक्ति की भंगिमा में विलक्षणता आ गई है। इस दृष्टि से दोनों कृतियों के कथ्य और शिल्प के प्रस्तुतीकरण में नये आयाम प्रस्तुत किये है। अभिव्यक्ति पक्ष एवं युगीन साहित्यिक विशिष्टता के आधार पर दोनों कृतियों में वक्रोक्ति के प्रयोग के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का उपक्रम किया गया है।

साहित्यावलोकन

वस्तुतः हिन्दी में रूक्मिणी और कृष्ण के विवाह की घटना को आधार बनाकर अनेक कवियों ने काव्य रचना की है। इन रचनाओं में विष्णुदास कृत 'रूक्मिणी मंगल, नंददास कृत 'रूक्मिणी मंगल', पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि क्रिसन रूक्मणीरी' अकबर दरबार के नरहरि बन्दीजन कृत 'रूक्मिणी मंगल तथा रघुराज सिंह कृत रूक्मिणी परिणय' आदि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

रूक्मिणी मंगलकारों ने प्रस्तुत कथा के विविध अंशों को अपनी कल्पना से अनुरंजित करके वातावरण विषयक अनेक परिवर्तन भी किये हैं।[1]

आलम का हिन्दी काव्य को योगदान इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि स्वच्छन्द परम्परा के कवि होते हुए भी विविध काव्य शैलियों में कृतियाँ प्रस्तुत की। एक ओर जहाँ आलम ने 'अक्षर मालिका' और 'आलम केलि' में उत्कृष्ट

मुक्तक सजाये हैं, वहीं 'सुदामा चरित' और 'स्याम सनेही' जैसी श्रेष्ठ प्रबन्ध रचनाएँ भी प्रस्तुत की।[2]

आलम के काव्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि वक्रोक्ति के निर्वाह में कवि ने बिना प्रयास किये अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। आलम के काव्य में प्रबन्ध वक्रता को नहीं परन्तु वर्ण वक्रता, पद पूर्वार्द्ध वक्रता, पद परार्ध वक्रता का अविरल प्रयोग मिलता है।[3] सर्जनात्मक प्रतिभा के धनी आलम ने अकबर और जहांगीर के शासनकाल में काव्य कला के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये। आलम की रचनाओं पर तत्कालीन रीतिकालीन काव्य परम्परा के साथ फारसी का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। डॉ. रामधारी सिंह दिनकर ने इसकी पुष्टि करते हुए लिखा है – ''रसखान, मुबारक आलम और शेख की कविताओं में जो ताजगी, जो निरालापन और बोधकता मिलती है, वह उनके पूर्वज अथवा समकालीन कवियों का सामान्य गुण नहीं है, विशेषतः आलम और मुबारक में एक विचित्र सम्मोहन है, जो संस्कृत और हिन्दी की परम्परा में होता हुआ भी अद्भुत और नवीन है।''[4]

राजस्थानी काव्य पुरोधा पृथ्वीराज राठौड़ को डिंगल का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है। डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित के अनुसार वेलिकार निश्चय ही भागवत का ऋणी है और यह ऋण उसने स्पष्टतः स्वीकार भी किया है, किन्तु भागवत की कथा वेलि की कथा से समानता रखते हुए भी गठन में बहुत कुछ भिन्न है और वेलिकार ने अपनी कवित्व शक्ति तथा रचना कौशल का पूरा परिचय दिया है। अपनी प्रतिभा से उन्होंने इस प्रसंग में जिन कल्पनाओं की योजना की है, वह कवि की कारयित्री भावयित्री प्रतिभा को उजागर करती है।[5]

उक्त समीक्षकों एवं विद्वानों ने अपने–अपने ढ़ंग में आलोच्य कवियों के काव्य प्रतिभा की चर्चा की है। यद्यपि दोनों काव्य कृतियों के कथावस्तु में मूल कथा एक ही है किन्तु जिन घटनाओं के संगुम्फन से काव्य का निर्माण किया गया है, दोनों ही कृतियां वर्णन प्रधान काव्य है, कथा गौण है, वस्तुतः आलोच्य कवियों का उद्देश्य कथा कहना नहीं है, अपितु उन्होंने कृष्ण–रूक्मिणी के कथा के माध्यम से एक कलापूर्ण काव्यकृति का निर्माण किया है। आलोच्य काव्य–कृतियों में वक्रोक्ति विधान पर तुलनात्मक दृष्टिकोण से विचार किया गया है।

यथासम्भव सम्बन्धित साहित्य की गुणवत्ता का अध्ययन करने के पश्चात् 2002 के पश्चात् उपर्युक्त विषय पर शोध कार्य पुस्तक के रूप में नहीं हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य

आत्मा की सहजानुभूति ही अभिव्यंजना है। किसी काव्य का जितना महत्व उसकी अभिव्यंजना पद्धति से होता है, उतना वस्तु तत्व से नहीं। इस दृष्टि से रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्यधारा के कवि आलम और डिंगल भाषा के कवि शिरोमणि पृथ्वीराज राठौड़ का 'अंदाज–ए–बयां' निराला है। हर कवि की अभिव्यक्ति भंगिमा की विलक्षणता में कुछ अंतर जरूर होता है। इस दृष्टि से विवेच्य कृतियों पर विचार करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है दोनों कृतियों में कथानक एक होते हुए भी शिल्प पक्ष की व्यंजना में अंतर है। वक्रोक्ति लोकोत्तर उक्ति है अर्थात् यह लोक में प्रचलित उक्ति से सर्वथा भिन्न होती है। यह वर्ण से लेकर प्रबन्ध तक वैचित्र्य की सृष्टि करके काव्य में सरसता विलक्षणता, मार्मिकता एवं व्यंजकता की सृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन आलोच्य काव्य कृतियों के संदर्भ में समीचीन एवं उपयोगी जान पड़ता है। वक्रोक्ति के निर्वाह में आलम स्वाभाविक रूप से सफल कवि ठहरते हैं, वहीं दूसरी ओर सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी पृथ्वीराज राठौड़ ने 'वेलि' में वक्रोक्ति का प्रयोग कर काव्य में लोकोत्तर विलक्षण छटा प्रस्तुत की है। प्रस्तुत शोध–पत्र को लिखने का उद्देश्य है कि हिन्दी साहित्य में एक ही कथावस्तु पर रची गई काव्य कृतियों में तत्कालीन परिवेशगत प्रवृत्ति का प्रभाव एवं कवि की वैयक्तिक प्रतिभा से उत्पन्न साम्य एवं वैषम्य का वक्रोक्ति के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त करना है। 'स्याम सनेही' और 'वेलि' में वक्रोक्ति विधान के संदर्भ में उत्पन्न चारूत एवं प्रभाव का तुलनात्मक विवेचन काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों के आधार पर प्रस्तुत कर आलोच्य कृतियों का काव्यशास्त्रीय महत्व निर्देशित करना भी इस शोध–पत्र का उद्देश्य है।

आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा के रूप में स्वीकार किया है। कुंतक ने भारतीय काव्यशास्त्र के पूर्व प्रचलित तथा स्थापित काव्य सिद्धान्तों का जैसे अलंकार, काव्य–गुण, काव्य–रीति, ध्वनि तथा रस आदि का समावेश वक्रोक्ति के अन्तर्गत करते हुए अपनी मौलिक स्थापना प्रस्तुत की है। वास्तव में कुंतक ने वक्रोक्ति सिद्धान्त को व्यापक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया है। कुंतक के अनुसार वक्रोक्ति केवल वाक् चातुर्य अथवा उक्ति चमत्कार नहीं है, वह कवि व्यापार अथवा कवि कौशल है।[6] 'वक्रोक्ति' का अर्थ है वक्र उक्ति, वाणी के विलक्षण व्यापार को वक्रोक्ति माना गया है। वक्रोक्ति के आचार्यों द्वारा जो प्रमुख भेद स्वीकार किये गये हैं, वे हैं – (1) वर्णविन्यास वक्रोक्ति, (2) पद पूर्वार्द्ध वक्रोक्ति, (3) पद परार्द्ध वक्रोक्ति, (4) वाक्य वक्रोक्ति, (5) प्रकरण वक्रोक्ति तथा (6) प्रबन्ध वक्रोक्ति। अतः इन प्रमुख भेदों की दृष्टि से आलोच्य रचनाओं का विवेचन निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

वर्ण विन्यास वक्रोक्ति

उक्त वक्रोक्ति का अर्थ है, वर्ण = व्यंजना + विन्यास = सन्निवेश + वक्रता = वैचित्र्य काव्य और कवि कर्म की सबसे पहली पहचान वर्णों की विन्यास विचित्रता है, जिसे वर्ण विन्यास वक्रता कहा गया है। काव्य के लिए वर्ण सन्निवेश वैचित्र्य इसलिए आवश्यक माना गया है कि वर्णों के ललित और पुरूष स्वभाव का सम्बन्ध रसास्वाद से है। रसास्वाद में सहृदय का चित्त या तो पिघलता है या प्रज्ज्वलित हो उठता है, इसलिए वर्णों के सन्निवेश वैचित्र्य को 'पहला कवि कर्म' कहा गया है।[7]

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में जब 'स्याम सनेही' और 'वेलि' का तुलनात्मक विवेचन करते हैं तो यह पाते हैं कि कवि आलम और कवि पृथ्वीराज राठौड़ दोनों ही वर्ण–विन्यास के क्षेत्र में प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं। आलोच्य कृतियों में वर्ण–संयोजन का चमत्कारिक प्रदर्शन मिलता है। कतिपय उपलब्ध भेद निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं –

एक वर्ण की आवृत्ति

स्याम सनेही में प्रयुक्त रूप :

(i) कहूँ कवित्त कहू कथा कहानी।[7]

(ii) बाली बीर बलभद्र बुलाए।[8]

वेलि क्रिसन रूक्मणीरी में प्रयुक्त रूप :

(i) कामणि कुच कठिन कपोल करी किरी।[9]

(ii) सारंग सिलीमुख साथि सारथी।[10]

दो वर्णों की आवृत्ति

स्याम सनेही से उदाहरण –

(i) पढ़ि पढ़ि बिरह बीज हिय बोइसि।[11]

(ii) अच्छर अवर अवर कछू बोलइ।।[12]

वेलि में प्रयुक्त रूप :

(i) रम्भ खम्भ विपरीत रूख।[13]

(ii) रह रह को बह रहे रहा।[14]

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि वर्ण वक्रोक्ति के प्रयोग में दोनों ही कृतियों के रचनाकार कुशल हैं। वेलिकार ने प्रायः प्रत्येक छंद में ही वर्ण चमत्कार द्वारा वर्ण वक्रोक्ति की सृष्टि की है। इस दृष्टि से दोनों कृतियों में पर्याप्त समानता है।

पद पूर्वार्द्ध वक्रोक्ति

पाणिनी ने 'पद' को परिभाषित करते हुए लिखा है, 'सुबन्तं तिड्.तम पद्मां।[15] अर्थात् युप (नाम) और तिड्. (क्रियापद) मिलकर ही पद कहलाते हैं। विवेच्य कृतियों में यत्र–तत्र पद पूर्वार्द्ध वक्रता का सुन्दर प्रयोग द्रष्टव्य है। इस वक्रता के अन्तर्गत पर्याय वक्रता, विशेषण वक्रता तथा क्रिया वैचित्र्य वक्रता के प्रयोग उपलब्ध होते हैं। इस वक्रता के रूपों में प्रतिपादिक अथवा 'धातु शब्द' का विन्यास वैचित्र्य दर्शनीय है।

पर्याय वक्रता

'स्याम सनेही' में प्रयुक्त पर्याय वक्रता का उदाहरण प्रस्तुत है –

(i) रसना रटत नाम थकि गई।[16]

(ii) जिन बोराइ गोपत्रीय भोरी।[17]

उपर्युक्त उदाहरणों में 'रसना' जीभ का पर्याय तथा 'गौरस' इन्द्रिय सुख का पर्याय दोनों से वर्ण वक्रता आ गई है।

'वेलि' से पर्याय वक्रता का उदाहरण द्रष्टव्य है–

(i) त्री वरणण पहिलै कीजि तिणी।[18]
गूँथियै जेणि सिंगार ग्रंथ।।

विशेषण वक्रता

स्याम सेनही से उदाहरण –

(i) हरित पीत भई सम सनेही।

(ii) रोकत सांस विरह की ताती।
लोइन छूटि लिखि मैं पाती।।[19]

निपात वैचित्र्य वक्रता

स्याम सनेही से उदाहरण –

(i) कै तैं कै मैं ब्रभन जानै।।[20]

क्रिया वैचित्र्य वक्रता

(i) धाइ धाइ अंकन भरि लीन्हीं।[21]

'स्याम सनेही' में पद पूर्वार्द्ध वक्रता के विविध रूप तुलनात्मक रूप से वेलि से अधिक उपलब्ध होते हैं।

पद परार्ध वक्रता

इसे प्रत्यय वक्रता भी कहते हैं, इसके अन्तर्गत 'सुप्' और 'तिड्.' प्रत्यय का विचित्र प्रयोग होता है। वास्तव में पद परार्ध वक्रता के प्रयोग में संस्कृत के कवि सिद्ध हस्त हुआ करते हैं। यद्यपि आलोच्य कवियों में भी पद परार्ध वक्रता के प्रयोग उपलब्ध होते हैं, परन्तु इस प्रकार के प्रयोग विरल ही होते हैं। 'स्याम सनेही' और 'वेलि' में पद परार्ध वक्रता के कतिपय प्रयोग द्रष्टव्य है, जिनमें पद परार्ध वक्रता के अन्तर्गत कारक के विन्यास वैचित्र्य के कारण वक्रता की सृष्टि हुई है।[22]

'स्याम सनेही' से उदाहरण

धन ज्यौं आए स्याम धन थै बिजुली करवार।
बोरि बहावहि बैरियहि बर सहि मूसलधार।।[23]

'बेलि' से –

मिलियै तटि ऊपटि बिधुरी मिलिया
धण धर धराधर धणी।।
केस जयण गंग कुसुम करम्बित
बेणी किरि त्रिवेणी वणी।।[24]

उपर्युक्त उदाहरणों से अवचेतन (बादलों) में तथा पृथ्वी में चेतन के कर्ता का आरोप है। इसलिए यहां कारक विन्यास वैचित्र्य वक्रता है।

वाक्य वक्रता

इसे वाच्य या वस्तु वक्रता भी कहते हैं। यह दो प्रकार की होती है –

सहज वस्तु वक्रता

पदार्थ की स्वाभाविक शोभा का वर्णन जैसे प्रकृति की उज्ज्वल आभा, वयः सन्धि आदि सहज सुंदर विषयों का स्वाभाविक वर्णन होता है। विवेच्य कृतियों में इस प्रकार के वर्णनों की भरमार है।

स्याम सनेही से उदाहरण

सांझ चंद उमगत जनु आवै
बालदसा छवि उमगि दिखावै
षोडस कला चन्द्र जो पावै
इक इक षोड्स दवस बढ़ावै।[25]

'वेलि' से उदाहरण –

पहिलौ मुख राग प्रगट थ्यौ प्राची
अरूण कि अरूणोद अम्बर।
पेखे किरि जागिया पयोहर
सांझ वन्दण रिखेसर।[26]

आलम और पृथ्वीराज की इन कृतियों में वर्णित नायिका (रूक्मिणी) के सौंदर्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आलम की अपेक्षा कवि पृथ्वीराज ने नायिका के नख–शिख के सौंदर्य का अधिक विस्तृत एवं प्रभावपूर्ण वर्णन किया है।

अर्थालंकारों के प्रयोग कौशल से वाक्य वक्रता

किसी भी अर्थालंकार का उदाहरण वाक्य वक्रता के अन्तर्गत गृहीत किया जा सकता है।[27] इस दृष्टि से स्याम सनेही एवं वेलि दोनों ही समृद्ध–सम्पन्न काव्य है। वाक्य में वक्रता लाने के लिए कवि अपने काव्य में अलंकारों का मनोहारी गुंफन करता है यथा स्याम सनेही से उदाहरण –

गौ सुत पर आधीन जन बनिक बियोगी भोर
संजोगी तीनौ भए चक्र पहनवा चोर

वेलि से उदाहरण

वाणिजाँ वधू गोबाछ असइवित
चोर चकब विद्रतीरथ वेल
गूर प्रगति एतला समपिया
मिळियाँ बिरह बिरहियाँ मेळा।[28]

प्रकरण वक्रता

प्रबन्ध के एक देश को प्रकरण कहते हैं। जिस प्रसंग से नायक के चरित्र में दीप्ति उत्पन्न होती है, सौन्दर्य का उन्मीलन होता है वह प्रकरण वक्रता का अन्यतम प्रकार माना गया है।[29] वस्तुतः आलम कृत स्याम सनेही और पृथ्वीराज कृत वेलि दोनों ही कृतियां प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत तो है किन्तु इन रचनाओं में अनेक देश अथवा सर्ग नहीं है। अतः इन काव्य कृतियों जो खण्डकाव्य के अन्तर्गत रखता है, समीचीन जान पड़ता है। अतः सम्पूर्ण रचना एक देश में ही समाहित है। दोनों ही रचनाकारों ने नायक श्रीकृष्ण के चरित्र में दीप्ति उत्पन्न करने के लिए जिस प्रसंग की है, वह 'प्रकरण वक्रोक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। यथा रूक्मिणी का संदेश पाकर कृष्ण उसके उद्धार हेतु तुरन्त प्रस्थान कर देना विरोधी पक्ष को पराजित कर छोड़ देना आदि प्रकरण।

प्रबन्ध वक्रता

साहित्य मनीषियों ने 'प्रबन्ध वक्रता' को काव्य सर्वाधिक उत्कृष्ट वक्रोक्ति के रूप में स्वीकार किया है। इसका कारण यह है कि इसका आश्रय न अक्षर होता है न पद न वाक्य न वाक्यार्थ प्रत्युत आदि से अंत तक संकलित समग्र काव्य ही इस वक्रोक्ति का आधार होता है। इसके भी प्रमुख तीन भेद माने गये हैं – एक तो जहां कवि मूल कथानक के रस को बदलकर नवीन चमत्कारी रस का आविर्भाव करता है, जिससे कथा अधिक सरस और आह्लादकारी हो जाती है। दूसरे, जहां कवि कथा के नीरस भाग का परित्याग कर केवल सरस भाग को ही ग्रहण करता है। तीसरे, जहां कवि एक ही कमनीय फल की प्राप्ति के उद्देश्य से कथानक आरंभ करता है, किन्तु नायक अपने पुरूषार्थ से अन्य फलों को भी प्राप्त कर लें।[30]

निष्कर्ष

प्रबन्ध वक्रोक्ति के उपर्युक्त लक्षणों के आलोक में जब हम आलमकृत स्याम सनेही और वेलि का मूल्यांकन करते हैं तो पाते हैं कि उक्त कवियों ने यद्यपि कथा सूत्र के रूप में भागवत में वर्णित कथा को ही मूल आधार बनाया है, परन्तु यह आधार केवल बीज रूप में ही है। दोनों ही कवियों ने समान रूप में कथा में मौलिक उद्भावना भी की है। आलम ने स्याम सनेही में मंगलाचरण, रूक्मिणी द्वारा एक पत्र प्रेषण, रूक्मिणी का सौंदर्य निरूपण आदि का समावेश कर कथा को रोचक बनाया है। पृथ्वीराज राठौड़ का योगदान आलम की तुलना में अधिक प्रशंसनीय है। जैसा कि डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित लिखते हैं –

वेलिकार ने अपनी कवित्व शक्ति तथा रचना कौशल का पूरा परिचय दिया है। अपनी प्रतिभा से उन्होंने इस प्रसंग से जिन मौलिक कल्पनाओं की योजना की है, उनसे पुरानी होते हुए भी कथा नवीन और अत्यन्त मनोरम रचना बन गयी है। वेलि को ग्रन्थ का स्वरूप देने के लिए मंगलाचरण, वेलि रूपक दुर्जन एवं सज्जनों के प्रति विनम्र प्रार्थना, वेलिका संदेश आदि कुछ ऐसे विषय है, जो कथा को काव्य का अलग रूप देने के लिए आवश्यक थे, किन्तु इसके अतिरिक्त भी रूक्मिणी द्वारा पत्र प्रेषित करना, रूक्मिणी का नख–शिख वर्णन, उसकी वयः सन्धि अथवा साज–सज्जा, ऋतुओं आदि का वर्णन आदि विषय भी ऐसे हैं जो भागवत के वर्णन से कोई सम्बन्ध नहीं रखते, जो नितान्त प्रसंगानुकूल तथा मौलिक है। युद्ध का वर्णन भी जिस विस्तृत रूप में यहां किया गया है वैसे भागवत में नहीं है।[31] इस प्रकार आलोच्य रचनाओं में प्रबन्ध वक्रता के सूत्र पर्याप्त रूप में उपलब्ध होते हैं। इतना अवश्य है कि स्वच्छन्द काव्य धारा के कवि आलम ने वक्रोक्ति जैसे कला पक्ष के बाह्य उपादानों के संदर्भ में विशेष ध्यान केन्द्रित नहीं किया है। कवि आलम काव्य में वक्रोक्ति सिद्धान्त स्वाभाविक रूप में मुखर हुआ है। इसको विपरीत वेलि में कवि पृथ्वीराज राठौड़ ने कला कौशल का अप्रतिम परिचय देते हुए वक्रोक्ति का सहज, मौलिक, विस्तृत एवं प्रभावपूर्ण प्रयोग किया है।

समग्र रूप में कहा जा सकता है कि दोनों ही कृतियों में वक्रोक्ति सिद्धान्त का सफल निर्वाह हुआ है, उपरोक्त रूप से पृथ्वीराज राठौड़ वक्रोक्ति सिद्धान्त के निर्वहन में आलम से अधिक प्रभावी रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिन्दी साहित्य कोश, भाग–2, ज्ञान मण्डल, वाराणसी, पृ. 507*
2. *त्रिपाठी, डॉ. राममूर्ति–आलम ग्रन्थावली, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, भूमिका, पृ. 21*
3. *सीमार डॉ. अंजू–शोध प्रबन्ध–आलम का काव्य शास्त्रीय अनुशीलन, 2001, पृ. 297*
4. *दिनकर, रामधारी सिंह : संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 434–35*
5. *दीक्षित, डॉ. आनन्द प्रकाश : वेलि क्रिसन रूक्मणीरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1965, पृ. 42–43*
6. *हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1, पृ. 601*
7. *मिश्र, विद्यानिवास (संपादित) आलम ग्रन्थावली, वाणी प्रकाशन, 2002, पृ. 214*
8. *मिश्र, विद्यानिवास (संपादित) आलम ग्रन्थावली, वाणी प्रकाशन, 2002, पृ. 231*
9. *दीक्षित, डॉ. आनन्द प्रकाश (संपादित), वेलि क्रिसन रूक्मणीरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1965, छं.सं. 24.1*
10. *दीक्षित, डॉ. आनन्द प्रकाश (संपादित), वेलि क्रिसन रूक्मणीरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1965, छं.सं. 67.1*
11. *मिश्र, विद्यानिवास (संपादित), आ.ग्र. पृ. 227*
12. *मिश्र, विद्यानिवास (संपादित), आ.ग्र. पृ. 227*
13. *वेलि, छं.सं. 26.2*
14. *वेलि, छं.स. 46.2*
15. *आचार्य मम्मट–काव्य प्रकाश (व्याख्याकार डॉ. सत्यव्रत सिंह), चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी,पृ. 8.69–70*
16. *मिश्र, वद्यानिवास (संपादित) आलम ग्रन्थावली, पृ. 220.16*
17. *मिश्र,विद्यानिवास (संपादित) आलम ग्रन्थावली, पृ. 209– 210*

18. *दीक्षित, डॉ. आनन्द प्रकाश (संपादित) वेलि क्रि.रू.री., विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1965, छ.सं. 8*
19. *मिश्र, विद्यानिवास – आलम ग्रन्थावली, पृ. 215.30*
20. *मिश्र, विद्यानिवास – आलम ग्रन्थावली, छं.सं. 216.30*
21. *मिश्र, विद्यानिवास – आलम ग्रन्थावली, छं.सं. 216.5*
22. *हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1, पृ.सं. 365*
23. *मिश्र, विद्यानिवास (संपादित) आलम ग्रन्थावली, पृ. 241*
24. *दीक्षित, डॉ. आनंद प्रकाश (संपादित) वेलि क्रिस रूक्मणीरी, छं.सं. 200*
25. *मिश्र, विद्यानिवास (संपादित) आलम ग्रंथावली, पृ. 204*
26. *वेलि, छ.सं. 15–16*
27. *चौधरी, डॉ. सत्यदेव तथा गुप्त डॉ. शांति स्वरूप, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 176*
28. *वेलि छ.सं. 186*
29. *उपाध्याय, डॉ. बलदेव–भारतीय साहित्य शास्त्र, प्रसाद परिसर, वाराणसी, 1947, पृ.सं. 417*
30. *कुंतक – वक्रोक्ति जीवितम्, चतुर्थोन्मेष (विकी स्त्रोत) 4/18–23*
31. *दीक्षित, डॉ.आनन्द प्रकाश–वेलि–भूमिका,विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1965, पृ. 91–92*